



मुहावरे

* अंकुर जमाना	- प्रारंभ करना ।
* अपने पैरों पर खड़ा होना	- आत्मनिर्भर होना ।
* आँच न आने देना	- संकट न आने देना ।
* आँखों में सैलाब उमड़ना	- फूट-फूटकर रोना ।
* आँखें फटी रहना	- आश्चर्यचकित रह जाना ।
* आईने में मुँह देखना	- अपनी योग्यता जाँचना ।
* आसमान के तारे तोड़ना	- असंभव कार्य करना ।
* ईंट का जवाब पत्थर से देना	- कड़ा जवाब देना
* उधेड़ बुन में लगना	- सोच-विचार करना ।
* एक आँख से देखना	- समान रूप से देखना ।
* एक और एक ग्यारह होना	- एकता में बल होना ।
* कदम बढ़ाना	- प्रगति करना ।
* कमर कसना	- पूरी तरह तैयार होना ।
* कमर सीधी करना	- आराम करना, सुस्ताना ।
* कलाई खुलना	- भेद प्रकट होना ।
* कान देना	- ध्यान से सुनना ।
* किस्मत खुलना	- भाग्य चमकना ।
* गले का हार होना	- अत्यंत प्रिय होना ।
* गागर में सागर भरना	- थोड़े में बहुत कहना ।
* घी के दीये जलाना	- खुशी मनाना ।
* चिकना घड़ा होना	- निर्लज्ज होना ।
* चुटकी लेना	- व्यंग्य करना ।
* जबान देना	- वचन देना ।
* झंडे गाड़ना	- पूर्ण रूप से प्रभाव जमाना ।
* डंका पीटना	- प्रचार करना ।
* तितर-बितर होना	- बिखर जाना ।
* हजारों दीप जल उठना	- आनंदित हो उठना ।
* रुपये दाँत से पकड़ना	- कंजूसी करना ।
* दूध का दूध, पानी का पानी करना	- इनसाफ करना, न्याय करना ।

* नाम कमना	- यश प्राप्त करना ।
* पाँचों उंगलियाँ घी में होना	- हर तरफ से लाभ होना ।
* फूला न समाना	- अत्यधिक प्रसन्न होना ।
* बीड़ा उठाना	- किसी काम को करने की ठान लेना ।
* बाँछें खिलना	- अत्यधिक प्रसन्न होना ।
* मरजीवा होना	- कठोर साधना से लक्ष्य तक पहुँचने वाला होना ।
* मल्हार गाना	- आनंद मनाना ।
* राई का पहाड़ बनाना	- बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना ।
* लोहा मानना	- श्रेष्ठता स्वीकार करना ।
* सफेद झूठ बोलना	- पूरी तरह से झूठ बोलना ।
* सिर खपाना	- ऐसे काम में समय लगाना जिसमें कोई लाभ नहीं ।
* सिर पर सेहरा बाँधना	- अधिक यश प्राप्त करना ।
* सोना उगलना	- बहुत अधिक लाभ होना ।
* सौ बात की एक बात	- असली बात, निचोड़ ।
* हाथ-पैर मारना	- बहुत प्रयत्न करना ।
* हौसला बुलंद होना	- उत्साह बना रहना ।
* श्रीगणेश करना	- कार्य आरंभ करना ।
* दाँतों तले उँगली दबाना	- आश्चर्यचकित होना ।
* अंधे की लाठी होना	- निराधार का सहारा बनना ।
* आग से खेलना	- मुसीबत मोल लेना ।
* मुट्ठी गर्म करना	- रिश्त देना ।
* इतिश्री होना	- समाप्त होना ।
* उड़ती चिड़िया पहचानना	- तीक्ष्ण बुद्धि वाला होना ।
* हथेली पर सरसों जमाना	- कठिन कार्य करना ।
* कंचन बरसना	- धन-दौलत से परिपूर्ण होना ।
* कानों कान खबर न होना	- बिल्कुल पता न चलना ।
* गाल बजाना	- अपनी प्रशंसा आप करना ।
* घड़ों पानी पड़ना	- बहुत लज्जित होना ।
* चिकनी-चुपड़ी बातें करना	- चापलूसी करना, मीठी-मीठी बातें बोलना ।
* छाती पर साँप लोटना	- ईर्ष्या होना ।
* तूती बोलना	- प्रभाव होना ।
* दो टूक जवाब देना	- स्पष्ट बोलना ।
* नुक्ताचीनी करना	- आलोचना करना ।

भावार्थ : पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्रमांक २० : पाठ – भक्ति महिमा – संत दादू दयाल

- * जो माया-मोह का रस पीते रहे, उनका मक्खन-सा हृदय सूखकर पत्थर हो गया किंतु जिन्होंने भक्ति रस का पान किया, उनका पत्थर हृदय गलकर मक्खन हो गया। उनका हृदय प्रेम से भर गया।
- * अहंकारी व्यक्ति से प्रभु दूर रहता है। जो व्यक्ति प्रभुमय हो जाता है, फिर उसमें अहंकार नहीं होता। मनुष्य का हृदय एक ऐसा सँकरा महल है, जिसमें प्रभु और अहंकार दोनों साथ-साथ नहीं रह सकते। अहंकार का त्याग करना अनिवार्य है।
- * दादू मगन होकर प्रभु का कीर्तन कर रहे हैं। उनकी वाणी ऐसे मुखरित हो रही है जैसे ताल बज रहा हो। यह मन प्रेमोन्माद में नाच रहा है। दादू के सम्मुख दीन-दुखियों पर विशेष कृपा करने वाला प्रभु खड़ा है।
- * जिन लोगों ने भक्ति के सहारे भवसागर पार कर लिया, उन सभी की एक ही बात है कि भक्ति का संबल लेकर ही सागर को पार किया जा सकता है। सभी संतजन भी यही बात कहते हैं। अन्य मार्गदर्शक, जीवन के उद्धार के लिए जो दूसरे अनेक मार्ग बताते हैं, वे भ्रम में डालने वाले हैं। प्रभु स्मरण के सिवा अन्य सभी मार्ग दुर्गम हैं।
- * प्रेम की पाती (पत्री) कोई विरला ही पढ़ पाता है। वही पढ़ पाता है, जिसका हृदय प्रेम से भरा हुआ है। यदि हृदय में जीवन और जगत के लिए प्रेम भाव नहीं है तो वेद-पुराण की पुस्तकें पढ़ने से क्या लाभ?
- * कितने ही लोगों ने वेद-पुराणों का गहन अध्ययन किया और उसकी व्याख्या करने में लिख-लिखकर कागज काले कर दिए लेकिन उन्हें जीवन का सच्चा मार्ग नहीं मिला। वे भटकते ही रहे, जिसने प्रिय प्रभु का एक अक्षर पढ़ लिया, वह सुजान-पंडित हो गया।
- * मेरा अहंकार - 'मैं' ही मेरा शत्रु निकला, जिसने मुझे मार डाला, जिसने मुझे पराजित कर दिया। मेरा अहंकार ही मुझे मारने वाला निकला, दूसरा कोई और नहीं।

अब मैं स्वयं इस 'मैं' (अहंकार) को मारने जा रहा हूँ। इसके मरते ही मैं मरजीवा हो जाऊँगा। मरा हुआ था फिर से जी उठूँगा। एक विजेता बन जाऊँगा।
- * हे सृष्टिकर्ता ! जिनकी रक्षा तू करता है, वे संसार सागर से पार हो जाते हैं।

और जिनका तू हाथ छोड़ देता है, वे भवसागर में डूब जाते हैं। तेरी कृपा सज्जनों पर ही होती है।
- * रे नासमझ ! तू क्यों किसी को दुख देता है। प्रभु तो सभी के भीतर हैं। क्यों तू अपने स्वामी का अपमान करता है? सब की आत्मा एक है। आत्मा ही परमात्मा है। परमात्मा के अलावा वहाँ दूसरा कोई नहीं।
- * इस संसार में केवल ऐसे दो रत्न हैं, जो अनमोल हैं। एक है सबका स्वामी-प्रभु। दूसरा स्वामी का संकीर्तन करने वाला संतजन, जो जीवन और जगत को सुंदर बनाता है।

इन दो रत्नों का न कोई मोल है, न कोई तोल ! न इनका मूल्यांकन हो सकता है, न इन्हें खरीदा जा सकता है, न तोला जा सकता है।

(१) यशोदा अपने पुत्र को चुप करने के लिए बार-बार समझाती है। वह कहती है – “चंदा आओ ! तुम्हें मेरा लाल बुला रहा है। यह मधु मेवा, पकवान, मिठाई स्वयं खाएगा और तुम्हें भी खिलाएगा। (मेरा लाल) तुम्हें हाथ में रखकर खेलेगा; तुम्हें जरा भी भूमि पर नहीं बिठाएगा।” यशोदा हाथ में पानी का बर्तन उठाकर कहती है – “चंद्रमा ! तुम शरीर धारण कर आ जाओ।” फिर उन्होंने जल का पात्र भूमि पर रख दिया और उसे दिखाने लगी – “बेटा देखो ! मैं वह चंद्रमा पकड़ लाई हूँ।” अब सूरदास के प्रभु श्रीकृष्ण हँस पड़े और मुस्कराते हुए उस पात्र में बार-बार दोनों हाथ डालने लगे।

(२) हे श्याम ! उठो, कलेवा (नाश्ता) कर लो। मैं मनमोहन के मुख को देख-देखकर जीती हूँ। हे लाल ! मैं तुम्हारे लिए छुहारा, दाख, खोपरा, खीरा, केला, आम, ईख का रस, शीरा, मधुर श्रीफल और चिरौंजी लाई हूँ। अमरूद, चिउरा, लाल खुबानी, घेवर-फेनी और सादी पूड़ी खोवा के साथ खाओ। मैं बलिहारी जाऊँ। गुझिया, लड्डू बनाकर और दही लाई हूँ। तुम्हें पूड़ी और अचार बहुत प्रिय हैं। इसके बाद पान बनाकर खिलाऊँगी। सूरदास कहते हैं कि मुझे पानखिलाई मिले।



- * शीर्षक
 - * रचनाकार
 - * केंद्रीय कल्पना
 - * रस/अलंकार
 - * प्रतीक विधान
 - * कल्पना
 - * पसंद की पंक्तियाँ तथा प्रभाव
 - * कविता पसंद आने के कारण
- इसके अतिरिक्त अन्य मुद्दे भी स्वीकार्य हैं।



रेडियो संहिता

रेडियो श्राव्य माध्यम है। इसलिए श्राव्य माध्यम के अनुकूल संहिता होती है। इसमें शब्दों के साथ ध्वनि संकेत, ठहराव, मौन, अंतराल आदि के संकेत भी होने चाहिए। गीत-संगीत के बीच में चलनेवाली आर.जे. की बातचीत कम शब्दों में रोचक, चटपटी और मिठास भरी होनी चाहिए। भाषा प्रवाहमयी हो। शब्द सरल हों। संहिता लयात्मकता के साथ कार्यक्रम को आगे बढ़ाने में सहायक होनी चाहिए। रेडियो संहिता के तीन हिस्से होते हैं। आरंभ, मध्य और अंत। आरंभ जितना आकर्षक, उतना ही अंत भी आकर्षक होना चाहिए। मध्य में विषयवस्तु कार्यक्रम की लंबाई पर निर्भर है।

हिंदी में रेडियो चैनल के लिए जो संहिता होती है, वह बहुत ही सधी हुई होती है। रेडियो की लोकप्रियता का सबसे बड़ा कारण है – कार्यक्रमों की प्रस्तुति, संयोजन और भाषा का नयापन। संहिता की भाषा गतिशील और अनौपचारिक होनी चाहिए। कुछ चैनलों पर जिस हिंदी भाषा का प्रयोग किया जाता है वह 'प्रोमो' हिंदी है। 'प्रोमो' अर्थात 'पोस्ट मॉडर्न' – उत्तर आधुनिक हिंदी। इस हिंदी भाषा में चुलबुलापन, मसखरापन, मस्ती और लय होती है। इसकी अपनी एक अलग पहचान है।

१. बैंक तथा वाणिज्य से संबंधित शब्द

- (१) Account = लेखा
 (२) Accountant = लेखापाल
 (३) Act = अधिनियम
 (४) Affidavit = शपथपत्र
 (५) Agreement = अनुबंध/करार
 (६) Annexure = परिशिष्ट
 (७) Audit = लेखा परीक्षण
 (८) Average = औसत
 (९) Session = सत्र
 (१०) Advocate General = महाधिवक्ता
 (११) Foreign Exchange = विदेशी विनिमय
 (१२) Fund Sinking = निक्षेप निधि
 (१३) Finance Commissioner = वित्त आयुक्त
 (१४) Deduction = कटौती
 (१५) Dividend = लाभांश
 (१६) Domicile Certificate = अधिवास प्रमाणपत्र
 (१७) Draft = मसौदा/प्रारूप
 (१८) Gazette = राजपत्र
 (१९) Investment = निवेश
 (२०) Management = प्रबंधन
 (२१) Revenue = राजस्व
 (२२) Clearing = समाशोधन
 (२३) Attestation = साक्ष्यांकन
 (२४) Cheque = धनादेश (चैक)
 (२५) Advance = अग्रिम
 (२६) Capital = पूँजी
 (२७) Cashier = रोकड़िया/कोषाध्यक्ष
 (२८) Amount = धनराशि, रकम
 (२९) Custom Duty = सीमा शुल्क

- (३०) Credit Amount = जमा रक्कम
 (३१) Finance Bill = वित्त विधेयक
 (३२) Finance Statement = वित्तीय विवरण
 (३३) Pension = निवृत्ति वेतन
 (३४) Service Charges = सेवा भार
 (३५) Corporation-Tax = नगर निगम कर
 (३६) Trade Mark = व्यापार चिह्न

२. विधि से संबंधित शब्द

- (३७) Bailable Offence = जमानती अपराध
 (३८) Defendent = प्रतिवादी
 (३९) Accused = अभियुक्त
 (४०) Bench = न्यायपीठ
 (४१) Show Cause = कारण बताओ
 (४२) Custody (Police) = पुलिस हिरासत
 (४३) Formal Investigation = औपचारिक जाँच
 (४४) Validity = वैधता
 (४५) Advocate General = महाधिवक्ता
 (४६) Judicial Power = न्यायालयीन अधिकार
 (४७) Ordinance = अध्यादेश

३. प्रशासनिक

- (४८) Chancellor = कुलाधिपति
 (४९) Deputation = प्रतिनियुक्ति
 (५०) Director = निदेशक
 (५१) Surveyor = सर्वेक्षक
 (५२) Supervisor = पर्यवेक्षक
 (५३) Governor = राज्यपाल
 (५४) Secretary = सचिव
 (५५) Eligibility = अर्हता
 (५६) Memorandum = ज्ञापन

(५७) Notification = अधिसूचना

(५८) Registrar = कुलसचिव

(५९) Administration = प्रशासन

(६०) Commission = आयोग

४. वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली

(६१) Mechanics = यांत्रिक

(६२) Gravitation = गुरुत्वाकर्षण

(६३) Orbit = कक्षा

(६४) Satellite = उपग्रह

(६५) Nerve = तंत्रिका

(६६) Nutrition = पोषण

(६७) Radiation = विकिरण

(६८) Tissue = ऊतक

(६९) Fertility = उर्वरता

(७०) Genetics = अनुवांशिकी

५. कंप्यूटर (संगणक) विषयक

(७१) Internet = अंतरजाल

(७२) Control Section = नियंत्रण अनुभाग

(७३) Hard Copy = मुद्रित प्रति

(७४) Storage = भंडार

(७५) Data = आँकड़ा

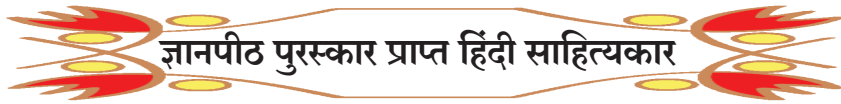
(७६) Software = प्रक्रिया सामग्री

(७७) Output = निर्गम

(७८) Screen = प्रपट्ट

(७९) Network = संजाल

(८०) Command = समादेश



साहित्यकार

- * सुमित्रानंदन पंत
- * रामधारी सिंह 'दिनकर'
- * 'अज्ञेय'
- * महादेवी वर्मा
- * नरेश मेहता
- * निर्मल वर्मा
- * कुँवर नारायण
- * अमरकांत
- * श्रीलाल शुक्ल
- * केदारनाथ सिंह
- * कृष्णा सोबती

साहित्यिक कृति

- चिदंबर
- उर्वशी
- कितनी नावों में कितनी बार
- यामा
- समग्र साहित्य
- समग्र साहित्य
- समग्र साहित्य
- समग्र साहित्य
- राग दरबारी
- अकाल में सारस
- जिंदगीनामा

वर्ष

- १९६८
- १९७२
- १९७८
- १९८२
- १९९२
- १९९९
- २००५
- २००९
- २००९
- २०१३
- २०१७

हिंदी साहित्यकारों के मूलनाम और उनके विशेष नाम

* अब्दुल हसन	-	अमीर खुसरो
* मलिक मुहम्मद	-	जायसी
* अब्दुरहीम खानखाना	-	रहीम
* सय्यद इब्राहिम	-	रसखान
* चंद्रधर शर्मा	-	'गुलेरी'
* पांडेय बेचन शर्मा	-	'उग्र'
* राजेंद्रबाला घोष	-	बंग महिला
* बदरीनारायण चौधरी	-	प्रेमधन
* गयाप्रसाद शुक्ल	-	'स्नेही'
* अयोध्यासिंह उपाध्याय	-	'हरिऔध'
* मोहनलाल महतो	-	वियोगी
* धनपतराय	-	'प्रेमचंद'
* रामधारी सिंह	-	'दिनकर'
* शिवमंगल सिंह	-	'सुमन'
* रामेश्वर शुक्ल	-	'अंचल'
* बालकृष्ण शर्मा	-	'नवीन'
* कन्हैयालाल मिश्र	-	'प्रभाकर'
* फणीश्वरनाथ	-	'रेणु'
* वैद्यनाथ मिश्र	-	नागार्जुन
* सूर्यकांत त्रिपाठी	-	'निराला'
* सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायन	-	अज्ञेय
* वासुदेव सिंह	-	त्रिलोचन
* गोपाल दास सक्सेना	-	'नीरज'
* महेंद्रकुमारी	-	मन्नू भंडारी
* श्रीराम वर्मा	-	अमरकांत
* उपेंद्रनाथ	-	'अशक'
* सुदामा पांडेय	-	धूमिल

मुद्रण सही ढंग से न हो तो अशुद्धियाँ रह जाती हैं। इससे मुद्रित सामग्री की रोचकता तथा सहजता कम हो जाती है। कभी-कभी किसी शब्द के अशुद्ध रहने से अर्थ बदल जाता है या किसी शब्द के रह जाने से अर्थ का अनर्थ हो जाता है। इस दृष्टि से मुद्रण प्रक्रिया में मुद्रित शोधन का अत्यधिक महत्त्व है। जिस प्रकार मन की सुंदरता न हो तो तन की सुंदरता अर्थहीन हो जाती है। उसी प्रकार पुस्तक बाहर से भले ही कितनी ही आकर्षक हो; भाषा की अशुद्धता के कारण वह प्रभावहीन हो जाती है।

मुद्रित शोधन के लिए आवश्यक योग्यताएँ :

मुद्रित शोधन का कार्य अत्यंत दायित्वपूर्ण ढंग से निभाया जाने वाला कार्य है। अतः इस कार्य के लिए मुद्रित शोधक में कतिपय योग्यताओं का होना आवश्यक है। जैसे -

- (१) मुद्रित शोधक को संबंधित भाषा एवं व्याकरण की समग्र और भली-भाँति जानकारी होनी चाहिए।
- (२) उसे प्रिंटिंग मशीन पर होने वाले कार्य का परिचय होना चाहिए।
- (३) उसे टाइप के प्रकारों, संकेत चिह्नों और अक्षर विन्यास की पूर्ण जानकारी होनी चाहिए।
- (४) मुद्रित शोधक को पांडुलिपि में स्वयं कोई परिवर्तन नहीं करना चाहिए। यदि कहीं उसे अशुद्धियाँ लगेँ या वाक्य सही/शुद्ध न लगे तो इसकी ओर लेखक का ध्यान आकृष्ट करना चाहिए।

मुद्रित शोधन चिह्नदर्शक तालिका :-

चिह्न	चिह्न और उनका अर्थ बोध	चिह्न	चिह्न और उनका अर्थ बोध
	डिलिट/हटाएँ।		सीध में लें। (करेक्ट वर्टिकल अलाइनमेंट)
	बदलें। (टूटा टाइप, अस्पष्ट खराब अक्षर बदलें)		सीधी रेखा-स्ट्रेट लाइन।
	स्थानांतर (ट्रांसफर) स्थान बदलें।		शब्द ऊपर लें।
	नया शब्द/वाक्यांश चिह्न के स्थान पर अक्षर बदलें।		शब्द नीचे लें।
	प्रश्नार्थक चिह्न लगाएँ।		नीचे लें। शब्द या अक्षर नीचेवाली पंक्ति में लें।
	इकहरा अवतरण (कोटेशन मार्क) लगाएँ।		ऊपर लें। ऊपरवाली पंक्ति में लें।
	दोहरा अवतरण (कोटेशन मार्क) लगाएँ।		नया परिच्छेद आरंभ करें।
	हायफन।		दाहिनी तरफ लें।
	अंडरलाइन-अधोरेखांकित करें।		बाई तरफ लें।
	शब्दों, अक्षरों में दूरी रखें।		मात्रा लगाएँ।
	दूरी कम करें।		मात्रा, अनुस्वार लगाएँ।
	दो पंक्तियों में दूरी दर्शाएँ।		अनुस्वार-मात्रा लगाएँ।